एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

जरबेरा की खेती

(*डॉ. विनय कुमार एवं डॉ. राम भरोसे)
कृषि विज्ञान केन्द्र, श्रावस्ती (आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज, अयोध्या)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: vinaykmr919@gmail.com

आजकल किसानों को परपंरागत फसलों से अपना मोह हटा कर ऐसी फसलों पर काम करना चाहिए जो व्यावसायिक दृष्टि से ज्यादा लाभदायक हों। अगर किसान सुगंधित पुष्पों की खेती करना चाहते हैं तो यह बहुत ही मुनाफे वाली रहेगी। इसमें प्रमुख रूप गेंदा, गुलाब, जरबेरा, ग्लेडियोलस, गुलदाउदी आदि हैं। जरबेरा के पौधे साल भर तक सुगंधित फूलों की उपज देते हैं। इसके पुष्पों की अलग की पहचान है। ये दिखने में इतने सुंदर होते हैं कि लोग बस एकटक इनको देखते ही रह जाते हैं। इसके अलावा इसमें लाल, पीले, नारंगी और सफेद रंग के फूल आते हैं। इन फूलों से शादी या अन्य समारोह में आकर्षक स्टेज सजाने के लिए अधिक उपयोग किया जाता है। एक हजार वर्ग मीटर एरिये में जरबेरा की खेती करने पर करीब साढे तीन लाख रूपये की लागत आती है। इसकी तुलना में वर्ष भर में जरबेरा उत्पाक किसानों को साढे नौ लाख रूपये से अधिक की आय होती है जो लागत का करीब तीन गुना है। आपको बता दें कि जरबेरा कीमती पुष्प है और इसकी बढिया पैदावार के लिए यह बहुत जरूरी है कि भूमि को इस तरह से तैयार करें जिससे जल भराव नहीं हो। इसके लिए हल्की क्षारीय और उपजाउ किस्म की भूमि का चयन किया जाना चाहिए। खेत में कम से कम चार जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा कर लें। इसके बाद गोबर की खाद के साथ उपलब्ध हो सके तो नारियल का भूसा भी डाला जा सकता है। पौधों की रोपाई करते समय ध्यान रखें कि पौधे से पौधे की दूरी 30 से 40 सेमी की रहे। पौधों की सिंचाई रोजाना की जानी चाहिए। पौधे तीन माह बाद ही फूल देने लगते हैं। जरबेरा खेती करने के विशेषज्ञों का मानना है कि एक हजार वर्गमीटर भूमि में उगाए गए जरबेरा के पौधे पूरे साल फूल देते हैं। लेकिन पौधों के मध्य खरपतवार बिल्कुल भी नहीं पनपने दें। जरबेरा की खेती पॉलिहाउस में ही करनी चाहिए क्योंकि इन पौधों के लिए अधिकतम तापमान 22 से 25 डिग्री सेल्सियस ही होना ज्यादा उचित रहता है।

जलवायु की आवश्यकता- जरबेरा की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय स्थितियां दोनों उपयुक्त होती हैं। उपोष्णकटिबंधीय जलवायु के मामले में इसे पाले से बचाना चाहिए, क्योंकि यह पाले के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं। जरबेरा फूल की खेती के लिए सबसे आदर्श तापमान दिन का 22 से 25^{0C} के बीच और रात का तापमान 12 से 16^{0C} के बीच उचित होता है।

जरबेरा की खेती के लिए मिट्टी–

- मिट्टी पीएच 5–5 और 6–5 के बीच होना चाहिए।
- क्षारीयता स्तर नहीं होना चाहिए।
- बेहतर जड़ों वृद्धि और जड़ों की बेहतर पहुंच के लिए, मिट्टी अत्यधिक छिद्रपूर्ण और अच्छी तरह से सूखाने वाली होनी चाहिए।
- रेड लेरड्रिच मिट्टी को जरबेरा की खेती के लिए आदर्श मिट्टी माना जाता है।

जरबेरा की किस्में-

- **लाल फूल वाली उन्नत किस्में** – वेस्टा, तमारा, फ्रेडोरेल्ला, रुबीरेड, साल्वाडोर और रेड इम्पल्स।
- **पीले फूल की किस्मे** – फूलमून, डोनी, सुपरनोवा, मेमूट, यूरेनस, तलासा, फ्रेडकिंग, नाडजा और पनामा।
- **नारंगी फूल की किस्में** – कैरेरा, मारा सोल, कोजक, ऑरेंज क्लासिक और गोलियथ।
- **गुलाबी फूल की किस्में** – टेरा क्वीन, वेलेंटाइन, पिंक एलिगेंस, रोसलिन, मारा और सल्वाडोर।
- **क्रीमी और सफेद फूल की किस्में–** विंटर क्वीन, डेल्फी, डालमा, फरीदा, व्हाइट मारिया और स्नोफ्लेक।
- **जामुनी फूल की किस्में–** ट्रीजर और ब्लैक जैक।

जरबेरा की पौध को तैयार–

- **कलम्प विभाजन–** इस विधि को सबसे अधिक पहाड़ी क्षेत्रों में इस्तेमाल किया जाता है। इसमें पौधों को उखाड़कर उनकी कलम्प बना ली जाती है, और फिर उन्हें पॉलीथिन में रखाकर नर्सरी में लगा दिया जाता है। इस माध्यम से पौधों का अंकुरण अधिक तेजी से होता है, तथा फूल भी कम समय में खिलकर तैयार हो जाते है।
- **बीज के माध्यम से पौध तैयार करना**– बीज से पौध को तैयार करने के लिए बीजो को नर्सरी में लगाया जाता है। इसके लिए जब पौधों पर फूल निकलने लगे तब बीज को फूल से निकाल ले और फिर नर्सरी में तैयार क्यारियों में लगा दे। इसके बीज का अंकुरण 5 से 7 सप्ताह में हो जाता है। लेकिन बीज से तैयार पौधे को पैदावार देने में अधिक समय लग जाता है। इसलिए बीज से पौधा उगाना कम अच्छा होता है।
- **उत्तक संवर्धन**– पौध निर्माण के लिए उत्तक संवर्धन की विधि को सबसे अच्छा माना जाता है। इसमें पौधों की कली, अग्र भाग और फूल के उत्तको द्वारा नई पौध तैयार की जाती है। इस तरह की पौधे को प्रयोगशाला में तैयार किया जाता है।

जरबेरा के पौधों की रोपाई–जरबेरा के पौधों की रोपाई सर्दियों का मौसम छोड़कर पूरे वर्ष किसी भी मौसम में कर सकते है। लेकिन अधिक और उत्तम पैदावार के लिए इसे जून से अगस्त के महीने में लगाना सबसे अच्छा होता है। इसके अलावा फरवरी और मार्च का महीना भी पौध उगाने के लिए अच्छा होता है। जरबेरा के पौधों को खेत के तैयार मेड़ में लगाया जाता है। नर्सरी में तैयार मेड़ो पर इसके पौधे एक फीट की दूरी पर लगाए जाते है। जरबेरा की पौधे की रोपाई खेत में करते समय पौधे की जड़ो को ठीक तरह से मिट्टी में दबा दे, लेकिन नए सिरे से निकलने वाली किसी भी पत्ती को नहीं दबाया जाता है। जरबेरा के पौधों की रोपाई शाम के समय करना काफी अच्छा होता है, इससे पौधों का अंकुरण ठीक से होता है।

सिंचाई– जरबेरा के पौधों को अधिक सिंचाई की जरूरत होती है। इसकी पहली सिंचाई पौधे रोपाई के तुरंत बाद की जानी चाहिए द्य इसके बाद पौधे अंकुरण होने तक हल्की सिंचाई करते रहे तथा पौधों के विकास करने तक उन्हें उचित मात्रा में पानी देते रहे। गर्मियों के मौसम में जरबेरा के पौधों

को सप्ताह में दो बार और सर्दी के मौसम में 15 से 20 दिन के अंतराल में पौधों को पानी दे। बारिश के मौसम में सिर्फ समय से बारिश न होने पर पौधों को पानी दे अन्यथा न दे।

खाद एवं उर्वरक– अच्छी उपज और पौधों के विकास के लिए खाद एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके लिए हमें निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए। मिटटी में पहले तीन महीनों के लिए नाइट्रोजन, फॉस्फेट, पोटेशियम की मात्रा इस 12:15:20 ग्राम अनुपात में डालना चाहिए वहीँ चौथे महीने में खाद का अनुपात नाइट्रोजन, फॉस्फेट, पोटेशियम 15:10:30 ग्राम वर्ग मीटर होना चाहिए। कैल्शियम, मैग्नीशियम, तांबा जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव 0-15 प्रतिशत–महीने में एक बार किया जाता है।

खरपतवार नियंत्रण– जरबेरा के पौधे अधिक लंबाई वाले नहीं होते है। इसलिए खरपतवार नियंत्रण करना बहुत जरूरी होता है। अन्यथा पौधों में कई तरह के कीट व रोगो का प्रभाव देखने को मिल सकता है। जिसका असर फसल की पैदावार पर होता है। खरपतवार नियंत्रण के लिए प्राकृतिक तरीका अपनाना चाहिए, इसके लिए पौधों की दो से तीन गुड़ाई करनी होती है। जिसमे पहली गुड़ाई को तकरीबन 20 से 25 दिन बाद तथा बाकी की गुड़ाई को 15 से 20 दिन में करे।

रोग एवं उपचार–

- ✓ **माहू–** माहू एक कीट जनित रोग होता है, जिसका कीट पौधे के नाजुक हिस्सों पर समूह बनाकर आक्रमण करता है। यह कीट देखने में काले, पीले और हरे रंग के हो सकते है। इन कीटो से बचाव के लिए मेलाथियान की उचित मात्रा का छिड़काव पौधों पर करते है।
- ✓ **सफेद मक्खी–** यह रोग जरबेरा के पौधों पर उसकी पत्तियों में देखने को मिलता है। सफेद मक्खी रोग से प्रभावित पौधे की पत्तिया सूखकर पीली पड़ जाती है, जिससे पौधे का विकास रूक जाता है। इस रोग से बचाव के लिए रोगर दवा का इस्तेमाल करते है।
- ✓ **जड़ गलन–** जड़ गलन का रोग फफूंदी जनित रोग होता हैं, जो खेत में अधिक नमी या जलभराव की वजह से पौधों पर देखने को मिलता है। यह रोग भी पौध विकास को पूरी तरह से बंद कर देता है, और कुछ समय पश्चात ही सम्पूर्ण पौधा नष्ट होकर गिर जाता है। इस रोग से बचाव के लिए ऑक्सिक्लोराइड दवा का छिड़काव पौधों की जड़ो पर करते है, तथा जल निकास की उचित व्यवस्था बनाकर भी इस रोग से बच सकते है।
- ✓ **लीफ माइनर–** इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियों पर सफेद और भूरे रंग की नालीनुमा पारदर्शी धारिया बन जाती है। जिसके बाद पौधा पोषक तत्व ग्रहण नहीं कर पाता है। क्लोरोडेन या टोक्साफेन दवा का छिड़काव पौधों पर करके इस रोग की रोकथाम की जा सकती है।

कटाई– आमतौर पर, जरबेरा के पौधे रोपण के तीन महीने के भीतर फूलना शुरू कर देते हैं, लेकिन, रोपण के बाद शुरुआती दो महीनों में यदि पौधे में कलियां आती हैं, तो उसे तोड़ दिया जाता है। पहले दो महीनों के बाद विकसित होने वाली कलियां फूलों में विकसित होने लगती हैं। जब फूल पूरी तरह से खिल जाते हैं, तो उन्हें काटा जाता है। जब फूल पूरी तरह खिल जाते हैं, तो बाहरी डिस्क को फूल डंठल को फूलों से काटा जाता है और कुछ घंटों के लिए सोडियम हाइपोक्लोराइट के घोल में धोया जाता है। इसके बाद में आकार, छाया के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है और फिर पैक किया जाता है। फूलों को पहले पॉली पाउच में पैक किया जाता है और उन्हें कार्डबोर्ड बॉक्स में पंक्तियों में सेट किया जाता है।

उत्पादन– जरबेरा के पौधे रोपाई के तकरीबन 5 से 6 माह बाद पैदावार देना आरम्भ कर देते ले जब पौधों पर लगे फूल पूर्ण रूप से खिले दिखाई दे तो उनकी कटाई कर लें। इसके बाद इन्हे पानी के बर्तन में रखे। आरम्भ में जरबेरा के फूलो को दो दिन में तोड़ना होता है, किन्तु जब फूल अधिक खिलने लगे तो प्रतिदिन कटाई करे। कटाई के पश्चात् सामान आकार वाली डंडियों वाले फूल की 12 से 15 डालियो को एकत्रित कर बंडल तैयार कर लिए जाते हैं। एक वर्ष में एक वर्ग मीटर के क्षेत्रफल से 200 से 250 फूल मिल जाते हैं। जिन्हे बेचकर किसान भाई अच्छी कमाई कर सकते है।